बूढा पीपल

साक्षी बना खड़ा हूं मैं बस सबके हर्ष विषाद का।
किंतु नहीं निरपेक्ष रहा हूं अनुशय या कि प्रसाद का।।1।।

मैं अग हूं इसलिए न मेरी व्यथा समझ पाया कोई।
नहीं भान है तुम्हें कि कब मैं हंसा कि कब आत्मा रोई।।2।।

जंगम होता तो पीछे पीछे मैं भी आ सकता था।
किंतु जड़े हैं यहां भूमि में बंधी कहां जा सकता था।।3।।

जिन डालों पर तुम झूले थे यद्यपि वे अब नहीं रहीं।
फिर भी तुम पहचान न पाओ ऐसी स्थिति है अभी नहीं।।4।।

आओ पुनः बताता हूं मैं बालक पन की राह में।
अब भी बहुत स्नेह धारा है बूढ़ी हुई निगाह में।।5।।

लोभ आक्रमण से हो लघुतर विशद सरोवर क्षीण है।
फिर भी जीवन रस शीतलता देने में सुप्रवीण है।।6।।

जिसमें जल क्रीड़ा की खुलकर वही बुलाता ताल है।
आओ पुनः तीर पर बैठो यद्यपि बीता काल है।।7।।

ईंट और लोहे गिट्टी को कहते सभी विकास हैं।
किंतु हमारे लिए बने ये मात्र ह्रास या त्रास हैं।।8।।

प्रतिद्वंद्विता लोभ ईर्ष्या भी आई इनके साथ है।
श्रद्धा सद्भावना प्रेम सब मानो हुए अनाथ हैं।।9।।

झांझ-मंजीरे गान जागरण सब अतीत की बातें हैं।
अब मोबाइल पर कामुक गीतों की ही बरसातें हैं।।10।।

भूल चुके नवयुवक फाग विरहा वैवाहिक गानों को।
आज भजन भी और भागवत लेती फिल्मी तानों को।।11।।

क्षीण हो रही है वह पीढ़ी विज तीज त्यौहारों से।।
नई पौध को कहां समय है रैली फिल्मी नारों से।।12।।

जो अतीत के कोष समुद्यत अब हैं जग से जाने को।
खोया जाता बहुत गांव में बाहर क्या है पाने को।।13।।

कागज के टुकड़ों के अर्जन में सब जीवन बीतेगा।।
धातु समूह अचेतन होकर भी चेतन से जीतेगा।।14।।

छोटा भवन बना लोगे तुम जीवन भर के अर्जन से ।
और मुक्ति पा जाओगे कुछ ग्राम प्रथाओं वर्जन से।।15।।

किंतु जान लो वहीं नगर में जब धंधा मंदा होगा।
जब घेरेंगे रोग कसा जब ऋण का दृढ़ फंदा होगा।।16।।

नहीं बढ़ेंगे हाथ तुम्हारी ओर सहाय दिलाने को।
चार लोग भी नहीं जुटेंगे खाक में खाक मिलाने को।।17।।

तब आएगी याद गांव की रोकर तुम पछताओगे।
तब तक होगा गांव खंडहर मात्र शून्यता पाओगे।।18।।

छोड़ ज्ञान का दंभ सहज हो जाओ बेटा कुछ पल को।
मात्र बुद्धि से समझ न पाओगे माया के दुश्छल को।।19।।

थोड़े ही अब सही विविध वर्णों के जल खग आते हैं।
अब भी सारस युगल प्रणय का स्वर संगीत सुनाते हैं।।20।।

मोर नाचते अब भी छत पर किंतु देखता कौन है।
कोकिल भी कुछ दिवस बोलकर पुनः धारता मौन है।।21।।

दिखते हैं बस खेत सुविस्तृत जहां आम्र के कुंज थे।
बेल सिंघाड़े का फैली है जहां कमलिनी पुंज खे।।22।।

जो कुछ भी अमूल्य है जग में कहां खरीदा जा सकता।
कौन ममत्व प्रेम करुणा को मात्र द्रव्य से पा सकता।।23।।

यद्यपि है श्री घटी देख लो अब भी जो कुछ शेष है।
मातृभूमि की रज से उठती अब भी गंध विशेष है।।24।।

पुनः लिपटने को आतुर वह मिट्टी जिसने तुम्हें गढ़ा।
आकुल है वह प्रकृति पाठ जीवन का तुमने जहां पढ़ा।।25।।

आओ पुत्रों तुम्हें बुलाता विरह व्यथित यह गांव है।
राह देखता बूढ़ा पीपल फैलाए निज छांव है।।26।।

पुनः बचाओ वह सब दुर्लभ जिससे भारत - भारत है।
कलुष बढ़ रहा फिर भी जीवित भीतर तत्व प्रभारत है।।27।।

यदि आओगे नहीं जर्जरित वह निकेत हो जाएगा।
दहां गढ़ा शिशु माल खंडहर मैं वह स्थल खो जाएगा।।28।।

प्रथम रुदन था सुना तुम्हारा आलय अब यह रोता है।
किलकारी से पुलकित होता था अब धीरज खोता है।।29।।

पद से और प्रतिष्ठा धन से शांति मिली किसको जग में।
भटक रहे हो ज्ञानी होकर भी मृग तृष्णा के मग में।।30।।

जब तक ज्योति बची नयनों में तक तक जल्दी आ जाओगे।
मां के कंपित हाथों निर्मित दाल भात तुम खा जाओ।।31।।

स्नेह और आशीष पगी यह अमृतमय ही रोटी है।
सारी भोग श्रंखला जग की इसके आगे छोटी है।।32।।

कभी निराशा पतझड़ आता आशा कोपल फिर आती।
कभी धड़कती है छाती आंखों में बगली घिर आती।33।।

अब यह निश्चित नहीं कि पतझड़ बाद पुनः अंकुर फूटे।
ऐसा संभव नहीं विधाता कभी नहीं मुझसे रूठे।।34।।

यद्यपि हूं चिरजीव किंतु अश्वत्थ नाम भी है मेरा।
ऐसा नहीं है कि चिर तक गर्वित नभ में हो मस्तक मेरा।।35।।

आ जाओ इस बार कहीं अंतिम मेरा यह पतझड़ हो।
ऐसा न हो कि सपल काल का मेरे प्रति भी अंधड़ हो।।36।।

आओ वत्स मिलेगी केवल यहीं तुम्हें शीतल छाया।
पाप ताप ही दे सकती है और सभी जग की माया।।37।।

मेरी पाण वायु से वर्द्धित मेरे अब भी छौने हो।
कहां घूमते विकल वेदना के असहाय खिलौने हो।।38।।

आओ शाप ताप हर लूंगा बैठो मेरी गोद में।
भर जाओगे विस्मित होकर तुम शिशु सुलभ प्रमोद में।।39।।

हो जाऊं यदि लीन नियतिवश पुनः रोप ना तुम पीपल।
ता कि मिले विभूति माधव की शिव की छाया शुभ शीतल।।40।।

नहीं कर सके ऐसा तो तुम ऋणी रहोगे इस रज के।
नहीं प्रवासी सुखी रहा है मातृभूमि अपनी तज के।।41।।